IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 09, 2022

भारत की सुरक्षा को चीन से चुनौतियाँ तथा भूटान का महत्त्व

अमित कुमार हुड्डा
शोधार्थी, रक्षा एवं स्त्रातेजिक विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
ईमेल : hooda875@gmail.com

सांराश

इस शोध पत्र में भारत की सुरक्षा की दृष्टी से भूटान के महत्त्व को स्पष्ट किया गया है। भारत–भूटान सन्धि 1949 के लाभ को दर्शाया है। नेपाल में चीन का सैनिक हस्तक्षेप भारत की सुरक्षा की दृष्टि से चिंता का विषय है। भारत और नेपाल के मध्य खुली सीमा रेखा भारत की सुरक्षा के लिए चुनौती बनी हुई है। ब्रह्मपुत्र पर बनने वाले बांध परियोजना और तिब्बत में चीनी गतिविधियां जल संकट ओर साथ–साथ ये बांध परियोजनाएं बाढ़ आदि समस्या भी उत्पन्न कर सकती है, जो युद्ध के दौरान विध्वंस मचाने में सक्षम होगा। हिन्द महासागर में भी चीन नौ सेना आकार और गुणवत्ता दोनों दृष्टियों से भारतीय नौ सेना से बेहतर है। जिसका सीधा प्रभाव भारत की सामुन्द्रिक सुरक्षा पर पड़ेगा। डोकलाम की घटना के दौरान चीन द्वारा भारत के विरूद्ध जिस प्रकार का रूख अपनाया है, इससे यह स्पष्ट होता है कि भविष्य में चीन भारत की उत्तरी सीमाओं पर अपनी घुसपैठों के द्वारा भारत पर सामरिक दबाव बनाता रहेगा।

मुख्य शब्द : *भुटान, चीन, भारत, हिन्द महासागर, तिब्बत, पाक अधिकृत कश्मीर, डोकलाम, भू–स्त्रातेजिक*

परिचय

वर्तमान समय में कोई भी राष्ट्र चाहे कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, अपनी प्रतिरक्षा को पूर्ण तथा अभेद नहीं मान सकता। सामान्यतः राष्ट्रों की यह आम रक्षा निति होती है कि किस प्रकार कम से कम शक्ति का प्रयोग करके सुरक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति अत्यधिक सीमा तक की जा सके।[1] विश्व में भारत की भू–स्त्रातेजिक स्थिति काफी महत्वपूर्ण है। भारत चारों ओर से ऐसे देशों से घिरा है,

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 09, 2022

जो आज राजनैतिक स्थिरता व सैनिक दृष्टि से आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। उत्तर में हिमालय भारत की सीक्यांग व तिब्बत से पृथक करता है। उत्तर–पूर्वी क्षेत्र के प्राकृतिक अवरोध भारत को चीन व बर्मा से पृथक करते हैं। पूर्व में बांग्लादेश, पश्चिम में पाकिस्तान तथा दक्षिण में श्रीलंका जैसे राष्ट्र स्थित हैं। एशिया के भू–युद्धनीतिक व भू–राजनैतिक परिवेश में भारत की केन्द्रीय स्थिति भविष्य में निर्णायक भूमिका अदा कर सकती है।[2]

भारत की एकता तथा अखण्डता को नष्ट करने के लिए चीन भारत से लगी अपनी सम्पूर्ण सीमाओं पर एक जबरदस्त कूटनीतिक चाल बीते कई दशकों से चलता आ रहा है। भारत के उत्तरी क्षेत्र ओर साथ में वह कश्मीर में अपना प्रभुत्व स्थापित करने का भी निश्चय कर चुका है। भारत के सन्दर्भ में चीन की विदेश नीति का एक बड़ा हिस्सा पाकिस्तान के हितों को ध्यान में रखकर किया जाता है। भारत और चीन के मध्य प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक सम्बन्ध चले आ रहे हैं। लेकिन भारत के स्वतंत्र होने के बाद और चीन में भी कोमिन्तांग सरकार के पतन के बाद जब भारत में लोकतंत्र का तथा चीन में साम्यवाद का प्रादुर्भाव हुआ तभी से दोनों देशों के बीच कटुता आयी। क्योंकि भारत की राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्थाएं चीन की साम्यवादी व्यवस्थाओं और प्रणालियों से पूरी तरह भिन्न थीं। भारत जहां शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के मार्ग पर चलना चाहता है, वहीं चीन की नीति आक्रामक व विस्तारवादी है। इसके अतिरिक्त भारत सम्पूर्ण एशिया में चीन के समान ही जनसंख्या, शक्ति और प्राकृतिक साधनों में उसका प्रतिद्वन्द्वी बनने की क्षमता रखता है। किन्तु चीन नहीं चाहता कि भारत बहुत अधिक शक्तिशाली बने।[3]

चीन पहले से ही परमाणु कार्यक्रम को लगातार आधुनिकीकरण करने की नीति पर चलता रहा है। शस्त्रों–हथियारों के निरन्तर आधुनिकीकरण, सिद्धान्तों तथा रणनीति में लगातार बदलाव से चीन आज भारत की नाभिकीय चिन्तन–धारा में एक महत्वपूर्ण खतरा बन चुका है। दोनों देश सीमा को लेकर 1962 में जंग भी कर चुके हैं। जिसमें भारत युद्ध हार गया। चीन ने भारत के जम्मू–कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र में अक्साई–चीन का 38 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र अपने अवैध कब्जे में ले रखा

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 09, 2022

है। इसके अलावा 1963 में पाकिस्तान से समझौता कर पाक अधिकृत क्षेत्र में कराकोरम का 5180 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र हथिया लिया। चीन ने अपनी सीमाओं से लगे रूस, मंगोलिया, म्यांमार, कोरिया, जापान, वियतनाम आदि देशों के साथ सीमा विवाद खत्म कर लिया, लेकिन भारत के साथ जानबूझकर सीमा विवाद सुलझाना नहीं चाहता। भारत–चीन के बीच द्विपक्षीय वार्ता के 19 दौर हो चुके हैं, लेकिन अब तक कोई समाधान नहीं हुआ है।[4]

तिब्बत में चीनी गतिविधियों का भारतीय सुरक्षा पर प्रभाव

भारत की उत्तरी सीमा का विस्तार हिमालय के साथ–साथ हुआ। महाभारत काल से ही भारत एवं तिब्बत के व्यापारिक सम्बन्ध रहे हैं। ब्रिटिश साम्राज्य के समय 1904 में ल्हासा से लेकर ग्यान्तसे तक विस्तृत तिब्बित प्रदेश अंग्रेजों के अधिकार में आ जाने के कारण यह भारत का अविभाज्य अंग बन गया था। लेकिन तिब्बत पर चीनी अधिकार के बाद तिब्बत भारत के परम्परागत सम्बन्धों में अवरोध उत्पन्न हो गया। तिब्बत को सामरिक दृष्टि से विकसित करने के पीछे चीन की सुरक्षात्मक भावना निहित है। चीन ने अपनी सुरक्षार्थ 'फाइव फिंगर थ्योरी' की घोषणा की। जिसमें तिब्बत को हथेली है और नेपाल, नेफा (अरुणाचल प्रदेश), भूटान, सिक्किम, लद्दाख इसकी पांच अंगुलियाँ हैं।[5]

चीन तिब्बत में रेल मार्ग एवं सूचना तंत्र का जाल बिछा कर भारत की सीमा को बहुत नज़दीक आ गया है। तिब्बत की ताकलाकोट मंडी जो कि भारत–तिब्बत के मध्य प्रमुख व्यापारिक मंडी हुआ करती थी, को चीनी सरकार ने सुरक्षात्मक दृष्टि से फोकस कर रखा है। चीन ने तिब्बत में ताकलाकोट क्षेत्र से लिपुलेख दर्रे (उत्तराखण्ड) तक 37 किलोमीटर पक्की सड़क बना ली है। हर छोटा–बड़ा कस्बा आई.एस.डी. एवं एस.टी.डी. से जुड़ चुका है। संचार क्रान्ति के कारण होटल एवं अन्य व्यवसाय फलफूल रहे हैं। लेकिन वहीं दूसरी ओर तिब्बत से लगे भारतीय क्षेत्र 89 किलोमीटर तक पैदल मार्ग से चलने के अलावा धारचूला (उत्तराखण्ड) से आगे कहीं भी फोन की सुविधा तक उपलब्ध नहीं है। चीन द्वारा भारतीय सीमा के क्षेत्रों में विकसित की जा रही सूचना क्रान्ति निश्चित रूप से हमारे लिये समस्या उत्पन्न कर सकती है। चीन द्वारा तिब्बत में प्रति वर्ष काफी मात्रा में आणविक कचरा फेंका

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 09, 2022

जाता है। यहां विश्व की सबसे बड़ी झील कोकोनार के पास हाईबेई में 20 घन मीटर रेडियो अवशेष है, क्योंकि यही पर चीन की नाभकीय मिसाइल का एक चौथाई हिस्सा तैनात है। चीन द्वारा तिब्बत में चलाई जा रही झांग्मू विद्युत परियोजना भारतीय सीमा से केवल 1100 किलोमीटर दूर है। अरूणाचल प्रदेश में दिहांग नाम से बहने वाली ब्रह्मपुत्र नदी पूर्वोत्तर भारत की जीवनदायनी स्त्रोत है। ब्रह्मपुत्र पर बनने वाले बांध परियोजनाएं हमारे पूर्वोत्तर भारत में जल संकट उत्पन्न कर सकते हैं। जल की कमी के साथ–साथ ये बांध परियोजनाएं बाढ़ आदि समस्याएं भी उत्पन्न कर सकती हैं। सिन्धु, सतलज, ब्रह्मपुत्र एवं इसकी सहायक नदियों का उद्गम स्थल भी तिब्बत है। चीन इन्हें एक प्रबल राजनैतिक हथियार के रूप में प्रयोग कर सकता है तथा युद्ध के दौरान विध्वंस मचाने में सक्षम होगा।[6]

भारत की सीमा में चीन की घुसपैठ का खतरा

उत्तरी सीमा का विस्तार हिमालय के साथ–साथ हुआ। वर्तमान समय में भी भारतीय सेनाओं के समक्ष चुनौतियों काफी बढ़ रही है और उसी हिसाब से उनकी जरूरते भी। ऐसे में भारत को ज्यादा सजग रहने की आवश्यकता है। इस सजगता की आवश्यकता तब तक बनी रहेगी जब कि दक्षिणएशिया में भारत के प्रमुख प्रतिद्वंद्वी पड़ौसी देशों, चीन व पाकिस्तान द्वारा हथियारों की प्रतिस्पर्धा समाप्त नहीं होती अथवा इनके साथ भारत के सम्बन्ध मधुर नहीं बनते। चीन भारत को अपना प्रमुख प्रतिद्वंद्वी मानता है, इसीलिए पाकिस्तान, बांग्लादेश, म्यांमार तथा श्रीलंका में अपने सैनिक अड्डे स्थापित कर भारत की घेराबन्दी करने में लगा है। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के गिलगित, बालिटस्तान क्षेत्र पर चीन ने अपना प्रभाव बढ़ा लिया है। चीन इन क्षेत्रों तक अपने देश को रेल व सड़क मार्ग में जोड़ रहा है। इससे चीन वहां तक 48 घंटे में सैन्य सामग्री पहुंचाने में सक्ष्म हो जाएगा। इसके अलावा चीन ने लिपुलेख, कराकोरम जैसे सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों तक सड़कें, तिब्बत के लहासा तक रेलमार्ग व लगभग 18 हवाई अड्डे एक ऐसी सोची समझी रणनीति के तहत विकसित किये हैं। चीनी ने अरूणाचल प्रदेश से लेकर लद्दाख, हिमाचल प्रदेश व उत्तराखण्ड से सटी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तक अपनी गतिविधियां

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 09, 2022

बढ़ा दी हैं। इन सबकी मद्द से चीन कभी भी भारतीय सीमा पर मात्र दो–तीन घंटे में अपनी चार लाख से ज्यादा अर्थात् 30 डिवीजन उतार सकता है।[7]

अक्टूबर 2011 में दक्षिण चीन सागर को लेकर चीनी चुनौतियां स्पष्ट तौर पर दोस्ताना सम्बन्धों की अभिव्यक्ति नहीं है। चीनी विदेश मंत्रालय के अनुसार, 'दक्षिण चीन सागर और उसके द्वीपों पर चीनी का सम्प्रभु अधिकार है और ऐतिहासिक साक्ष्य उसके दावों का समर्थन करते हैं। इस स्थिति में बिना इजाजत के इस क्षेत्र में तेल, गैस की खोज की गतिविधियां अवैध और गैर–कानूनी मानी जाएगी।[8] इस बात से सहज अन्दाजा लगाया जा सकता है कि चीन की हमेशा से यह इच्छा रही है कि भारत को हिमालय के दक्षिण में ही बांधकर रखा जाए, जिससे कि वह प्रतिद्वंद्वी के रूप में खड़ा न हो सके। इसके अन्तर्गत पाकिस्तान को भारत के समकक्ष खड़ा करना, म्यांमार को कूटनीतिक वैधशाला के रूप में इस्तेमाल करना तथा भारत के अन्य पड़ोसी देशों बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका में अपनी जड़े मजबूत करना इत्यादि चीन की अहम रणनीति में शामिल है। इसके अलावा चीन भूटान में भी लगातार अपनी दिलचस्पी दिखा रहा है। चीन द्वारा भारत के शत्रुओं को सैन्य तकनीकी और हथियार देना चीन के नापाक इरादों को दर्शाती है।[9]

चीन के विस्तारवादी चरित्र के कारण ही भूटान के डोकलाम में भारत और चीन के बीच टकराव की समस्या पैदा हुई थी। भारतीय सेना ने भूटान के डोकलाम में 16 जून 2017 को चीन के सड़क निर्माण के प्रयास को रोक दिया। इसी समय से दोनों सेनाओं के बीच तनाव का माहौल पैदा हो गया था। यदि चीन सड़क बनाने में कामयाब हो जाता है तो चीन की पहुंच भारत के पूर्वोत्तर इलाके तक हो जाती है।[10] इससे चीन के चरित्र का पता चलता है।

चीन भारतीय हितों को नुकसान पहुंचाने के लिए पहले ही पाकिस्तान का इस्तेमाल करता रहा है। वह भारत को घेरने की नीति अपनाते हुए म्यांमार, बांग्लादेश, श्रीलंका, सेशेल्स, मालद्वीव आदि पड़ोसी देशों में अपना प्रभाव बढ़ाने में जुटा है। इनमें से कुछ देशों की सेनाओं को तो वह लगभग मुफ्त में हथियार और रक्षा सामग्री दे रहा है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 09, 2022

नेपाल–चीन सैन्य गठजोड़

नेपाल–चीन की सैन्य गठजोड़ इस समय चिन्ता का विषय है। सुस्ता में अतिक्रमण की घटना ने नेपाल के प्रति भारत के गठजोड़ को तो खत्म किया है साथ में नेपाल ने चीन के साथ सैन्य गठजोड़ करके भारत को एकदम से सुन्न कर दिया। निश्चय ही भारत की सुरक्षा की दृष्टि से यह गठजोड़ चिन्ता का विषय है। नेपाल में चीन ने परोक्ष रूप से सैनिक हस्तक्षेप शुरू कर दिया। नेपाल में चीन का सैन्य सहयोग नेपाल के लिए कितना गम्भीर होगा? भारत पर माओवादी ताण्डव की दुश्छाया ने भी नेपाल में माओवादी आन्दोलन की जड़ों को मजबूत कर दिया है, क्योंकि इन माओवादियों के निशाने पर भारतीय मूल के नेपाली लोग ज्यादा हैं और इसके संबंध सीमावर्ती भारतीय क्षेत्र के निवासियों से भी हैं। इसलिए सीमावर्ती क्षेत्रों में रह रहे लोगों का इन माओवादियों ताण्डव की दुश्छाया से प्रभावित होना स्वाभाविक है। नेपाल की खुली सीमा से ही भारत में तस्करी का सुगम मार्ग है। चुंकि खुली सीमा होने के नाते यहां पर्याप्त चौकसी की व्यवस्था नहीं हो पाती है। इसलिए, इसका लाभ तस्कर अकसर उठाते रहते हैं। तस्करी के इन समानों में विस्फोटक पदार्थ, हथियार, जाली नोट, मादक पदार्थ आदि तक शामिल होते हैं। पाक खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. सहित अन्य राष्ट्र विरोधी तत्वों की भारत–नेपाल सीमा पर सक्रियता अब देश के समक्ष चुनौती बनती जा रही है। भारत को अपनी सीमावर्ती क्षेत्रों की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर अभी माओवादियों की गुरिल्ला शैली से ही परेशानी थी। अब इनकी परेशानी और भी बढ़ गई हैं, क्योंकि माओवादियों ने पीपुल्स लिबरेशन आर्मी का गठन कर डाला है। माओवादियों द्वारा सेना के गठन का काम लगभग पूरा हो गया है। पूरी तरह से प्रशिक्षित सेना में तीन डिवीजन, नौ ब्रिगेड, 29 बटालियन के अलावा एक लाख मिलिटेंट रखे गये हैं। पड़ोसी मुल्क नेपाल में शांति की बजाय महासंग्राम की तैयारी चल रही है। भारत और नेपाल के मध्य खुली सीमा भारत की सरुक्षा की दृष्टि से एक चुनौती बनी हुई है। इसका सबसे बड़ा बुरा प्रभाव सिकुड़ती सीमाओं के रूप में देखा जा सकता है।[11]

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 09, 2022

हिन्द महासागर में चीनी गतिविधियां और भारत की सुरक्षा

छठी–सातवीं सदी में पूर्व हिन्द महासागर क्षेत्र में सुमात्रा के शासकों का नियन्त्रण था। बारहवीं सदी से लेकर 1433 ई. तक इस महासागर में बढ़ते चीनी प्रभाव व शक्ति के कारण यह 'चीनी झील' बन गया था। सन् 1498 में वास्को–डि–गामा, केप–आफ–गुडहोप की तरफ से भारत पहुंचा और इसके बाद के वर्षों में हिन्द महासागर पर यूरोपीय शक्तियों का नियन्त्रण हो गया, जिसमें सबसे पहले पुर्तगालियों ने इस क्षेत्र का सामरिक–आर्थिक महत्त्व समझकर इसके अनेक तटीय देशों ओर द्वीपों पर अधिकार कर लिया। जैसे मलक्का, साकोत्रा, हार्मुज, सीलोन (श्रीलंका), मुम्बासा और तिमोर। लगभग सोलहवीं सदी के अन्त तक इन जगहों पर पुर्तगालियों के अन्त तक इन जगहों पर पुर्तगालियों का अधिकार था।

सन् 1641 में डचों ने पुर्तगालियों को हराकर इस क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व मलक्का, केप आफ गुड होप, मारीशस तथा भारतीय तटीय क्षेत्रों में अपना प्रभुत्व स्थापित किया।[12]

वर्तमान में अमेरिका और रूस के बाद चीन की नौसेना विश्व में तीसरा स्थान रखती है। 20वीं सदी के छठे दशक के प्रारम्भिक वर्षों में चीन ने अपनी नौसेना का बड़े पैमाने पर आधुनिकीकरण एवं विस्तार का कार्यक्रम शुरू किया था। फलस्वरूप आज चीनी नौसेना आणविक क्षमता से युक्त है। सन् 1980 में पहली बार चीन की नौसेना ने बिना किसी दूसरे देश के बंदरगाह की सुविधाएं प्राप्त किए समुद्रों में 13000 नाविक मील की दूरी तय की तथा उसमें विभिन्न प्रकार के नौसैन्य अभ्यास किये। 1985–86 में चीनी युद्धपोतें ने हिन्द महासागर क्षेत्र की यात्रा की।

सन् 2006 में एशिया प्रशान्त क्षेत्र में जापान को पीछे छोड़ते हुए चीन सैन्य सामग्री पर खर्च करने वाले सबसे बड़े राष्ट्र के रूप में उभरा है। इस समय चीन विश्व में अपनी रक्षा पर खर्च करने में चौथा सबसे बड़ा राष्ट्र है। चीन का सैन्य व्यय में तेजी से बढ़ता हुआ रूझान स्पष्ट रूप से सामने है। जिसमें सन् 1997–2006 के दशक के दौरान 195 प्रतिशत की वृद्धि देखने को मिली है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 09, 2022

चीन की नौसेना आकार और गुणवत्ता दोनों दृष्टि से भारतीय नौसेना से बेहतर है। चीन अपनी सशस्त्र सेनाओं के आधुनिकीकरण में बड़ी मात्रा में संसाधनों का निवेश कर रहा है। फलस्वरूप वर्तमान में उसकी नौसेना अमेरिका को भी चुनौती देने में सक्षम है।[13]

भारत–भूटान सन्धि 1949

भारत–भूटान सन्धि से एक महत्वपूर्ण लाभ यह हुआ कि तिब्बत में स्थित चीनी सेना भूटान में नहीं घुस सकी। लेकिन भूटान को भी 1949 की संधी से यह आंशका बनी रही कि एक दिन सन्धि की आड़ में भारत, चीन से रक्षा का बहाना बना कर उस पर कब्जा कर सकता है। जब अंग्रेजों ने भूटान के साथ सम्बन्ध बनाये थे, उस समय चीन में अराजकता फैली हुई थी, उस समय भारत ने भूटान के साथ अपने सम्बन्धों को विकसित किया और तत्कालीन परिस्थिति का लाभ नहीं उठाया।

तिब्बत में जब खम्बा विद्रोह हुआ, उस समय चीन ने तिब्बत के उन आठ क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया, जो भूटान के प्रशासन में थे, इस घटना के कारण, प्रधानमंत्री नेहरू ने भूटान की यात्रा की एवं उस दौरान कई विषयों पर वार्ता के अतिरिक्त दोनों पक्षों के बीच सड़कें बनाने का भी फैसला हुआ।

इसके बाद भारत–भूटान सन्धि 1949 के अन्तर्गत, नेहरू ने 22 मार्च, 1959 को चाऊ–एन–लाई को लिखा कि उनके हाल ही में छापे गए नक्शे स्थापित नियमों व सन्धि के अनुसार नहीं हैं। तो चाऊ–एन–लाई ने 8 सितम्बर, 1959 को जवाब दिया कि भूटान की चीन के साथ सीमा का विषय, हम लोगों की वार्ता के दायरे में नहीं आता है। 1949 की भारत–भूटान सन्धि में भूटान या सिक्किम के खिलाफ किसी भी प्रकार का आक्रमण भारत पर किया गया आक्रमण माना जाएगा।[14]

भारतीय सुरक्षा की दृष्टी से भूटान का महत्त्व

भूटान, भारत सरकार के संरक्षण एवं सलाह मसावरों पर चलता है। इसकी विदेश नीति तथा प्रतिरक्षा का भार भारत सरकार पर है। भूटान में लगभग 18 सामरिक दुआर या दर्रे है, जो दुर्गम हिमालय की पहाड़ियों, एक पर्वत पदीय प्रदेशों

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 09, 2022

और पर्वतीय मध्य भूटान को जोड़ते हैं। पुनाखा का किला सम्पूर्ण सनकोस घाटी का नियंत्रण करता है। यहां पर उसका सामरिक महत्त्व बहुत अधिक है। इसके अतिरिक्त वांगडू फोडरंग का किला अपनी सामरिक महत्ता तथा देश की रक्षा में अपनी जिम्मेदारी के लिए भूटान के इतिहास में अति प्रसिद्ध है। चीन का विचार भूटान के प्रति कभी अच्छा नहीं रहा।[15]

चीन ने 1958 की नेहरू की लहासा यात्रा को विफल किया तथा एक मानचित्र छापकर भूटान के लगभग 30 वर्गमील भूमि पर अपना दावा किया। 1965 में चीन द्वारा 'डोकलाम चारागाह' का अतिक्रमण करना तथा उसे सदा से ही चीन का भाग होने का दावा करना भूटानियों को भारत के प्रति आकर्षित होने के लिए बाध्य कर दिया। चीन की सदा विस्तारवादी नीति रही है और वह भूटान पर अपना कब्जा करके भारत के पूर्वी राज्यों पर अपनी निगाह गढ़ाए हुए है। अतः भारतीय सीमा की रक्षा के लिए भूटान का सुदृढ़ होना आवश्यक है। भूटानी बहादुर हैं तथा इन्होंने तिब्बत के 5 आक्रमण विफल कर दिए।

भारत की पूर्वांचल सीमा की प्रतिरक्षा के लिए भूटान एक उपद्रवी इलाका है और राजनैतिक दृष्टिकोण से भी। लेकिन इसे किसी रूप से 'उपद्रवियों की भूमि (land of Dragoons) के रूप में नहीं छोड़ा जा सकता है। भूटान–चीन सीमा रेखा विवाद (जल विभाजक रेखा) के समय भारत ने भूटान की प्रतिरक्षात्मक सुविधाएं बढ़ा दी। अतः भारत की प्रतिरक्षा के लिए भूटान का कितना सामरिक महत्त्व है, इसका वर्णन करना बड़ा कठिन है। पूर्वोत्तर सीमान्त रेखा की रक्षा के लिए यह 'धुरी' का कार्य करता है।

निष्कर्ष

भारत और चीन के बीच किसी टकराव से इन्कार नहीं किया जा सकता। भारत की उत्तरी सीमा का विस्तार हिमालय के साथ–साथ हुआ। वर्तमान समय में भी भारतीय सेनाओं के समक्ष काफी चुनौतियां बढ़ रही हैं। चीन अपनी विस्तारवादी वाली नीति के तहत अपने पड़ोसी देशों में अपने प्रभाव को बढ़ा रहा है। नेपाल के साथ भी चीन के सम्बन्ध अच्छे हो रहे हैं और पाकिस्तान को भी परमाणु तकनीक देने के साथ–साथ वह मध्यम गति से मार करने वाले तथा लम्बी दूरी तक मार

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 09, 2022

करने वाले हथियार और टैकनोलोजी प्रदान करता है। जिसका सीधा प्रभाव भारत की सुरक्षा पर पड़ता है। भारतीय सीमा क्षेत्र में चीन की घुसपैठ की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। चीन तिब्बत में रेल मार्ग एवं सूचना तंत्र का जाल भारत की सीमा के काफी नजदीक आ गया है और भूटान के डोकलाम क्षेत्र में भी 16 जून 2017 को घुसपैठ और हिन्द महासागर की तरफ से भारत की सुरक्षा को चीन से ही सर्वाधिक खतरा है। अरूणाचल प्रदेश में दिहांग नाम से बहने वाली ब्रह्मपुत्र नदी पूर्वोत्तर भारत की जीवनदायिनी स्त्रोत है। सिन्धु, सतलज, ब्रह्मपुत्र एवं इसकी सहायक नदियों का उद्‌गम स्थल भी तिब्बत है। चीन इन्हें एक प्रबल राजनैतिक हथियार के रूप में प्रयोग कर सकता है। जो कि भारत की सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बन सकता है। अतः इन सब सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए अपनी सैन्य ताकत को और बढ़ाने की आवश्यकता है। देश की सुरक्षा को मजबूत बनाने के लिए रक्षा खर्च में वृद्धि करके नये हथियारों का विस्तार तेजी से करना चाहिए। अपने पड़ोसी छोटे राष्ट्रों के साथ सहयोग बनाकर सम्बन्ध घनिष्ट बनाने चाहिए। भारत की सुरक्षा की दृष्टी से भूटान का बहुत महत्व है। इसलिए अपने पड़ोसी राष्ट्र भूटान की सुरक्षा के लिए भारत को तैयार रहना चाहिए। क्योंकि चीन और पाकिस्तान दोनों देश मिलकर यहां पर कभी भी खतरा उत्पन्न कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. L.J. Kavik, *'India's quest for security'*, p.1
2. मेजर आर.सी. कुलश्रेष्ठ, *युद्ध के साधन और साध्य*, पृ. 53
3. डॉ. नन्द किशोर त्रिखा, *चीन, तिब्बत और भारत की सुरक्षा,*
4. डॉ. बी. एल. फाड़िया, *अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति,*
5. गैरोला, डॉ. वाचस्पति, *भारत का उत्तर–पूर्वी सीमान्त क्षेत्र,* पृ. 37
6. शोध धारा, शोध पत्रिका, सितम्बर 2008, पृ. 101
7. डॉ. लक्ष्मी शंकर यादव, अरिहन्त समसामयिकी महासागर, जुलाई 2011, चीन–पाक से मिलती सामरिक चुनौतियां, पृ. 68

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**, Journal Volume 11, Iss 09, 2022

8. रहीस सिंह, *दबंगई को मिले करारा जवाब,* राष्ट्रीय सहारा (गढ़वाल संस्करण), 1998
9. ब्रह्मा चेल्लानी, *भारत–चीन सम्बन्ध एवं तिब्बत,* पृ. 77
10. संपादकीय, दैनिक भास्कर, 6 जुलाई, 2017, पृ. 4
11. जवाहरलाल नेहरू, *इंडियाज फॉरेन पालिसी स्लोकिटड स्पीचिज,* पृ. 436
12. डॉ. अजय कुमार सिन्हा, *राष्ट्रीय सुरक्षा की परम्परागत और अपरम्परागत समस्याएं,* पृ. 248
13. हर्षवर्धन पंत, *भारतीय सुरक्षा और विदेश नीति,* पृ. 244–245
14. Labh Kapilesh War, *'India and Bhutan'*, Sindhi Publications house, New Delhi, 1974
15. Karan & Jenkins, *The Himalayan Kingdoms*, p. 35

———————————